सड़क की लय

सुषम बेदी

नेहा ने सुना पापा कहे जा रहे थे-"सड़क की भी एक लय होती है। उसे सुनो, पहचानो, और उसी हिसाब से गाड़ी चलाओ। जब तुम मैनहैटन में चलाती हो तो यहां सैंकड़ों गाड़ियां एक साथ चलती हैं। बार-बार लाल बत्ती होने से रुकना पड़ता है। इसलिये गाड़ी की स्पीड खूब धीमी रखनी चाहिए, ताकि धचके से ब्रेक लगाने की जरूरत न पड़े"

परसों नेहा का ड्राईविंग का इम्तहान है। यूं तो नेहा ड्राईविंग स्कूल में कार चलाना सीखती रही है पर एक बार टेस्ट में फेल होने के बाद वह काफी नर्वस है और पापा ने कहा कि वह उसका कुछ अभ्यास करवा देंगे। पापा की तो ड्राईविंग बढ़िया होती ही है। कितने बरसों से तो चला रहे हैं वे गाड़ी।

छोटी थी तो ज़िद करती थी गाड़ी चलाने की पर तब पापा कहा करते थे कि बड़ी हो जाओ तब सिखलायेंगे तुमको गाड़ी। पर कालेज जाने पर उसे व□त ही नहीं मिला। अब तो नौकरी भी शुरु हो गयी और उसे होश आया है गाड़ी सीखने का।

तेईस बरस की उम्र में गाड़ी चलाना सीख रही है। सबर्ब में रहने वाले लड़के-लड़कियां तो सोलह साल के होते ही चलाने लगते हैं। पर नेहा तो मैनहैटन में रहती है। यहां गाड़ी की वैसी जरूरत पड़ती ही नहीं वर्ना वह भी पहले सीख जाती। भैया भी तो लेट सीखा था। नौकरी लगने पर ही। ममा तो आज तक नहीं सीखीं। सो इतनी कोई बात नहीं देर से सीखने में।

पर नेहा अब तैयार है। हर चीज के लिये तैयार। यूं नेहा हर काम सीखने के लिये वक्त से पहले ही तैयार रहती है। उसके स्कूल की टीचर भी यही कहा करती थी। यही बात है कि उसे हर काम आसान लगा करता था। क्लास में वह हमेशा अगुआ ही रही। पर उसके इसी गुण को लेकर ममी की सहेली ने नेहा को प्रिकाशस बच्ची कहा था यानि कि वक्त से पहले ही परिपक्व! यह गुण की तरह नहीं बल्कि एक दोष की तरह ही सुनाया गया था। यूं बात भी कुछ अजीब सी हो गयी थी। तब वह ग्यारह बरस की रही होगी। क्लास में जैनी ने सब लड़कियों से पूछा था -"तुम में से कौन-कौन वर्जिन है।" नेहा को वर्जिन का मतलब ही नहीं पता था। पर उसने देखा कि जिस लड़की ने भी कहा कि वह वर्जिन है उसका जैनी और उसकी सहेलियों ने खूब मज़ाक उड़ाया था। न ही नेहा की हिम्मत पड़ी थी अपनी सहपाठियों पर अपना अनजानापन ज़ाहिर करने की। पर घर आकर उसने पहला काम यही किया कि ममी के अपनी सहेली के साथ बैठे होने पर भी ध्यान न दे टपककर सवाल पूछ लिया -"ममी वर्जिन क्या होता है?"

ममी अभी सवाल के प्रति सतर्क भी नहीं हुई थीं कि नेहा ने जोड़ दिया-"मैं तो वर्जिन नहीं हूं न ममी?"

इससे पहले कि ममी के अवाक चेहरे पर कोई हरकत होती, ममी की सहेली बोल उठी थी-"माई गॉड कितने प्रिकाशस बच्चे हैं। मुंह से दूध निकला नहीं कि वर्जिनिटी के सवाल उठाने लगे।भई अभी तो तुम्हारी खेलने-पढ़ने की उम्र है। यह सब जान कर करना भी क्या है?"

ममी ने मानों होश में आते हुए कहा था-"ठीक बात है।नेहा तुम तो इतनी अच्छी, इतनी अक्लमंद बच्ची हो।तुम्हें इन सब बातों में नहीं पड़ना चाहिए। तुम तो ऐसी अमरीकी लड़कियों की संगत में पड़ो ही न। बस अपना फोकस पढ़ाई पर ही रखो।"

अपनी नज़र में नेहा आज भी उतनी ही भोली या समझदार थी जितनी कि सवाल पूछने से पहले। लेकिन उसे लगा कि सवाल मात्र पूछने से ही वह ममी-पापा की नजर में कुछ और हो गयी थी।

तब से नेहा को लगता जैसे कि ममी-पापा को वह सबसे प्यारी तभी लगती है जबकि वह भोली-नन्हीं बच्ची बनी रहती है। जिसे कुछ नहीं मालूम दुनिया-दीन का। पापा बेहद खुश होते जब वह तोतली जुबान में हिंदी में बतियाती।

पर जहां स्कूल के काम का सवाल था वे उससे पूरी बल्कि सामान्य से ज्यादा परिपक्वता की उम्मीद करते।उसे याद है एक बार उसके इम्तहान में नंबर कम आये थे तो उन्होंने कहा था-"डोंट एंड अप बीइंग ए मेड्याकर। यू मस्ट एक्सेल इन युअर स्टडीज़।"

अब इतने बरसों बाद भी परिपक्वता या अपरिपक्वता की वह दुविधा शायद सुलझी नहीं दीखती। किन चीजों में बड़ा हो जाना चाहिये और किन में नहीं--इसका माप तौल चलता ही रहता है।

एक बार गाड़ी चलाना सीखते-सीखते वे लोग मैनहैटन को दायें-बायें से घेरने वाली हाईवे पर आ गये थे। पर नेहा अभी भी धीमी गति से ही चला रही थी।पापा बोले-"जब तुम हाईवे पर चलाती हो तो स्पीड तेज रखनी होती है। सड़क भी खूब चौड़ी होती है और लाला बत्तियां भी नहीं होती।साथ ही दूसरी कारें भी इतनी तेजी से चल रही होती हैं कि अगर तुम धीमा चलाओगे तो सारे यातायात में व्यतिक्रम और गतिरोध पैदा हो जायेगा। इसी से कह रहा हूं कि सड़क की लय को ही सबसे पहले समझना चाहिये।तभी तुम एक अच्छी और सेफ ड्राईवर बन सकती हो।"

पर नेहा अब बहुत सी उन चीजों के लिये तैयार है जिसे पापा जानते-समझते हुए भी चर्चा से बचाते रहते हैं।

नेहा को महसूस होता है कि ममी -पापा इस बारे में खुद ही स्पष्ट नहीं हैं कि उनकी बेटी को लड़का अपनी मर्जी से अपने-आप खोजना चाहिये या कि वे उसके लिये इंतजाम करेंगे। ममी की बड़ी बहन की बेटी की शादी जोधपुर रहनेवाले एक लड़के से तय हुई थी। यहां आने के बाद उसका अजीब सा ही सुलूक रहा और अंततः उस शादी का हश्र तलाक में हुआ था। तभी से ममी नेहा की किसी हिंदुस्तान के लड़के से शादी तय करने के खिलाफ थीं। पर अब नेहा के बड़े हो जाने के बाद कभी तो वह कह देतीं कि फलां आंटी तुमको एक लड़के से मिलवाना चाहती है। यह भी साथ ही जोड़ देती कि तुम मिलना चाहती हो तो मिलो वर्ना ऐसी कोई जबरदस्ती नहीं। ममी कहतीं- "आई डोंट वांट यू टू फील हयूमिलिएटेड"

कभी वह कह डालती -"यूं ठीक है पढ़ती रहो और नौकरी भी करो। पर देखा जाये तो बाईस-तेईस साल में शादी तो हो ही जाती है लड़कियों की। मैं तो इक्कीस भी पूरे नहीं कर पायी थी जब शादी हुई।"

नेहा को लगता कि ममी के रवैये मे बदलाव इस पर भी मुनस्सर करता था कि उन दिनों वे किससे मिल रही थीं। अपनी अमरीकी सहेलियों से, कुछ पुराने □यालों की हिंदुस्तानी सहेलियों से या किसी रिश्तेदार से। ममी उनके सवालों और टिप्पणियों से बहुत जल्दी बहक जातीं।

इसीलिये शायद ममी कभी नेहा से यह भी कह देती- "देख हमारा तो जमाना और था। यहां कोई शादी की जल्दी नहीं मचाता। जब कोई ढंग का टकर जाये तो कर लो वर्ना अपने काम में लगे रहो। कोई बंदिश तो नहीं। हिंदुस्तान में तो अब तक सारे रिश्तेदार पीछे पड़ गये होते कि भई लड़की को क्यों अभी तक कंवारा बैठा रखा है।"

और साथ ही जोड़ देती -"वैसे तो शादी हो ही जानी चाहिए लड़कियों की ठीक उम्र में वर्ना न तो अच्छे लड़के ही बचे रहते हैं और लड़कियों का स्वभाव भी इतना पक्का हो जाता है कि मन माफिक लड़का मिलना ही मुश्किल हो जाता है।"

नेहा को मालूम था कि ममी का इशारा उसकी सहेली अंशुल की ओर था। अंशुल उनतीस बरस की हो चली थी। तीन साल पहले एक भारतीय मूल के लड़के के साथ उसका संबंध बढ़ा था और दोनो साथ रहने लगे थे। फिर साल भर बाद उस लड़के ने कहा था कि उसका अंशुल से शादी का विचार नहीं। वे चाहें तो यूं ही साथ रहते रहें। कभी भविष्य में भी उसका शादी का इरादा होगा, ऐसा भी कोई आश्वासन नहीं था।

अंशुल ने रिश्ता तोड़ लिया था। उसके बाद जो भी रिश्ते बने, सबका हश्र कुछ ऐसा ही हो रहा था। एक लातिन अमरीकी लड़का था जिसके साथ वह शादी नहीं करना चाहती थी, एक काला लड़का था, जिससे शादी करने से उसके मां-बाप ने स□त विरोध किया था। यूं मां-बाप की मर्जी के खिलाफ जाकर वह चाहे शादी कर ही लेती पर वह रिश्ता खुद ही टूट

गया।अब वह अचानक उनतीस बरस की उम्र में सन्यासिन बनने की ठान कर बैठ गयी थी! न तो अब वह वैसे झमक-झमक गहने पहनती थी न ही चेहरे पर गहरा मेकअप करती। सफेद साड़ी पहन घंटों ध्यान में लगी रहती। उसने अपने अपार्टमेंट में ही एक कोने में मूर्तियां रखकर मंदिर बना लिया था। आये दिन दक्षिण ऐशियाई सांस्कृतिक कार्यक्रमों को संगठित करती और नारीवाद की हिमायत करती। कितनी कड़वाहट भर गई थी अंशुल में मर्दजात के प्रति। एक उग्र नारीवादी बन कर उसने यही कड़वाहट सारे समाज में फैलाने का बीड़ा उठा लिया था।

नेहा उस कड़वाहट से बचना चाहती है।

ममी को डर लगता कि ठीक उम्र पर नेहा किसी से बंधी नहीं तो पता नहीं किस दिशा में मुड़ जाये। अंशुल का जिक्र कर वह कह देती -"यह भी कोई उम्र है सन्यास लेने की। उनतीस बरस में तो लड़की सर से पांव तक गृहस्थी में रमी होती है।तुम्हारी पीढ़ी की तो बातें ही निराली है। कभी तो इतना रागरंग और कभी धूनी रमा लो"

नेहा हंस देती -"ममी ये सब फैड्स हैं। कल को अंशुल को कोई मनपसंद लड़का मिल गया तो सन्यास-वन्यास सब भूल जायेगी। उसे रोज ही जीने का कोई नया मकसद खोजना होता है। "

"वह तो ठीक है पर कुछ टिकाव भी तो होना चाहिये जिंदगी में। अब इस उम्र में तो किसी के साथ बस ही जाना चाहिये न!"

नेहा को खुद भी तो नहीं पता कि सही दिशा क्या है।

अपने मां बाप के तरीके की तयशुदा शादी उसकी कल्पना के बाहर है। बाकी किसी से रिश्ता जोड़ने में वह भी घबराती है। जो भी रिश्ता जोड़ता है, उसे अंत तक , पूरे चरम तक पहुंचाना होता है, तभी कोई गंभीरता से विवाह की बात सोचता है ।और इसी चरम तक आज़मा लेने के दौरान पता नहीं कब क्या चटख जायेगा कि पूरा रिश्ता ही चकनाचूर हो जाता है।उसकी सहेलियों के साथ यही कुछ तो हो रहा है।इसी डर से वह किसी लड़के के साथ गहरी आत्मीयता का रिश्ता नहीं जोड़ पायी।मन के रिश्ते से शरीर को परे रखना नामुमकिन हो जाता है। बल्कि यह भी एक शर्त हो जाती है कि मन को समर्पित कर दिया तो शरीर क्या चीज है? उसे उलझाने में हिचक क्यों!

इसी आतंक से अब तक उसका शरीर कुंवारा है, अतृप्त है।

पर वह कब तक खुद को संभाल कर रखती रहेगी!

ममी हमेशा उसे खुद को बचाये रखने के लिए शादी तक कुंवारापन बनाये रखने का पाठ बचपन से पढ़ाती रही हैं।

क्या जब तक सही लड़का नहीं मिलता वह यूं ही रहे?

केवल शरीर की तृप्ति के लिये तो शादी के बंधन में पड़ जाना अक्ल की बात नहीं! ऐसा नहीं होने देगी वह!

नेहा समझ नहीं पाती ममी सचमुच में क्या चाहती हैं। कभी तो इतने खुले दिमाग वाली अमरीकी महिलाओं जैसी बन जाती हैं तो कभी एकदम दकियानूसी!

उस दिन उसने सुना ममी की एक हिंदुस्तानी सहेली उनसे कह रही थी-"आजकल तो जमाना बदल गया है। क्या पता कल को लड़की आकर यह कहे कि मैं फलां लड़के के साथ रहना चाहती हूं।शादी किये बगैर। हमारे रोकने से कोई सुनेंगे भला! मुझे तो ऐसे-ऐसे □याल डराते रहते हैं।अगर कुछ ऐसा हुआ तो सारे समाज में बदनामी हो जायेगी।"

शायद इन्हीं सहेली की बात का असर होगा कि अगले दिन ममी नेहा से पूछ रही थीं- "तेरे दिमाग में कोई लड़का है तो हमें बता दे! अगर तुम किसी के साथ -वाथ रहने की सोच रही हो तो हम तुम्हारी मंगनी किये देते हैं। यूं ही नहीं रहने दूंगी मैं"

नेहा खूब सोच रही है आजकल।सोचती ही तो रहती है...कैसे सही रास्ते पर उतारे अपनी जिंदगी!

नेहा के पास बहुत कुछ है बताने को। ममी की ऐसी बातें उसे आश्वासन नहीं देतीं। और डरा देती हैं।

नेहा अभी किसी से मंगनी नहीं करना चाहती। वह सचमुच सिर्फ साथ रहकर देखना चाहती है।अभी उसका शादी में बंधने का इरादा नहीं। फिर भी किसी के प्रेम और साथ से खुद को वंचित नहीं रखना चाहती। ममी ने भी तो इक्कीस की उम्र में शादी कर ली थी।वह तो तेईस पार कर लगभग चौबीस की हो चली है! क्या वह ममी को बता सकती है कि वह लड़का उसके साथ ही पढ़ा हुआ एक अमरीकी है। वह उस तरह से महत्वाकांक्षी नहीं जैसा कि ममी-पापा अपने जवाई की कल्पना करते हैं। वह डाक्टर-इंजीनियर या वकील कुछ भी नहीं बनना चाहता।वह स्कूल टीचर है और इस देश के बच्चों को स्कूली शिक्षा की अच्छी नींव देने में विश्वास रखता है।उसे बच्चों के साथ काम करना पसंद है और वही वह कर रहा है, करना चाहता है।

कैसे बतायेगी उनको! वे तो कैसा मुंह बनायेंगे। ममी सोचेंगी कैसा लद्धड़ लड़का चुना है..स्कूल टीचर! वह ममी के चेहरे पर आये उतार चढ़ाव की बहुत सही कल्पना कर सकती है! उसके बाद ममी बहुत देर तक उससे बात नहीं करेंगी।सोच में पड़ जायेंगी। शायद रोयें-धोयें भी कि उनके उम्र भर के □याली पुलावों पर पानी पड़ गया। कहां उनकी अपनी बेटी तो आर्किटेक्ट है और जवाई स्कूल टीचर! यूं है तो नेहा के ही स्कूल आफ आर्किटेक्चर का स्नातक पर सर पर हाई स्कूल के बच्चों का दिमाग दुरुस्त करने का फितूर।ममी शायद किसी को उसके धंधे के बारे में बताना भी न चाहें। उसने ममी की प्रतिक्रियाओं को बहुत पहले से जान

लिया है। उसकी एक सहेली के बारे में वे पहले ही कह चुकी हैं-"नियति खुद तो इतनी ब्राईट और खुबसूरत लड़की है यह एक स्कूल टीचर के शिकंजे में कैसे फंस गयी."

नेहा को ममी के कहने के अंदाज़ से बहुत बुरा लगा था। उसने नियति की पैरवी करते हुए ममी को समझाने की कोशिश भी की थी-"ममी वह तो बड़ा आईडियलिस्टक लड़का है। उसका ढेर सारे पैसे कमाने में विश्वास नहीं है। वह बच्चों की जिंदगी बनाना चाहता है। ममी अगर स्कूल टीचिंग में अच्छे और ब्राईट लोग नहीं जायेंगे तो इस देश के नागरिक कैसे अच्छे बनेंगे! सब कोई यूनिवर्सटी में ही पढ़ाने लगें और स्कूलों में न पढ़ाना चाहे तो यूनिवर्सटियों मे पढ़ने कौन आयेगा।"

ममी ने उसे चुप करा दिया था-"फिक्र मत कर ।बहुत है स्कूलों में पढ़ाने वाले। मैं तो सिर्फ यह कहना चाहती थी कि नियति उससे कहीं बेहतर के योग्य है। बाकी सयाना कांव गूं पर ही बैठे तो कौन रोक सकता है!"

नेहा फिर भी पैरवी करती ही रही थी-"ममी अभी अगर वह स्कूल टीचर है तो इसका यह मतलब नहीं कि सारी उम्र यही बना रहेगा। यहां लोग प्रोफेशन बदलते रहते हैं। कल को यूनिवर्सटी में पीएच. डी में दाखिला लेकर बाद में यूनिवर्सटी का प्रोफेसर भी बन सकता है, या जो कुछ भी करना चाहे। यूं स्कूल टीचर की तन□वाह भी कालेज प्रोफेसर से कम तो नहीं होती। बाकी यहां हिंदुस्तान वाली बात नहीं है कि एक बार जो बन गये वही रास्ता सारी उम्र के लिये हो गया।"

"ठीक है ज्यादा बड़बड़ मत कर।हर वक्त मुझी को शिक्षा देती रहती है"

ममी को इस बात का भी गुस्सा आता है कि बजाय वे अपनी बेटी को शिक्षा दें उल्टे वही उनको भाषण देती रहती है जैसे कि वह अनुभवी दादी-अम्मां हो और ममी मात्र एक बच्ची! बच्ची को आज़ादी देने का यह फल मिल रहा है उनको। पर पापा से उसकी इस तरह पेश आने की हिम्मत नहीं होती।पापा से डरती है और उनकी बात ध्यान से सुनती भी है। मां को तो कुछ समझती ही नहीं!

पापा जब उसे सड़क की लय समझा रहे थे तो नेहा को लगा जैसे पापा बहुत कुछ समझते हैं। अब वे उसकी तोतली बोली सुनने की फरमायश भी कभी नहीं करते। बल्कि इस बात का अपनेआप पर हंसते हुए जिक्र करते हैं कि कैसे उनको पहले यह बोली मीठी लगा करती थी। पर अब नेहा बड़ी हो गयी है और उसे बड़ों की तरह ही बोलना चाहिये। सोचते-सोचते अचानक उसकी हिम्मत पड़ गयी थी-"पापा ड्राईविंग-प्रैक्टिस के बाद मुझे पीटर के यहां छोड़ देंगे?"

"पीटर कौन? यह कोई नया दोस्त है तुम्हारा।"

"नया नहीं।स्कूल में साथ पढ़ता था। अब वह फिर न्यूयार्क में लौट आया है।"

"कहां छोड़ना है?"

"फाटी फिफ्थ स्ट्रीट पर।"

"क्या जगह? कोई रेस्ट्रां है?"

"नहीं। "

"रहता है वहां?"

"हूं.." कुछ हिचक के साथ नेहा ने उगला था छोटा सा हूं।

पापा ने हैरानी साफ न झलकाते हुए पूछा था-

"तुम उसके अपार्टमेंट में जाओगी।"

"मेरी उससे बहुत पुरानी दोस्ती है।"

पापा का भय, कर्तव्यपरायणता, समझदारी, सभी कुछ उनके चेहरे पर भरपूर उतर आये थे। कुछ सचेष्ट संयमित स्वर में बोले-

"लेकिन जानती हो न किसी लड़के के अपार्टमेंट में इस तरह जाना...क्या वहां और लोग भी होंगे?"

"मुझे मालूम नहीं...पर शायद मुझी को बुलाया है"-वह चाहती थी कि पापा सच जान जायें और सच बतलाने की भी हिम्मत नहीं हो रही थी।

पापा जान जायें और चुप रह अपनी सम्मति दे दें, ऐसी ही भीतरी □वाहिश थी उसकी।

"तो तुम्हारी इतनी दोस्ती है कि...?"

"हूं.."

"क्या तुम उसको प्यार करती हो?"

"हुं? मालूम नहीं"

"अगर तुम उसके अपार्टमेंट में अकेली जा रही हो तो तभी जाओ अगर वह इंसान तुम्हारे लिये खास है।वर्ना कुछ ऐसा-वैसा हो गया तो गलत होगा.."

"पापा वह खास तो है!"

"इसका मतलब तुम उसे प्यार करती हो"

"मालूम नहीं।हम बहुत पक्के दोस्त हैं"

"क्या और भी कोई लड़का तुम्हारा इतना पक्का दोस्त है?"

"नहीं"

"तो फिर यही तुम्हारा खास है।तुम शायद इसे प्यार भी करती हो।मेरे सामने गवारा करने से घबराती हो।"

"अभी मालूम नहीं । कुछ कह नहीं सकती।हो सकता है करती होउं!"

नेहा हैरान थी यह कैसी बातचीत उसके और पापा के बीच हो रही है आज!

उसे अचानक महसूस हुआ कि पापा की निगाह में वह सचमुच बड़ी हो चुकी है। पापा समझते हैं सब।बस वही घबराती रही है इस तरह की बातचीत से।

"तुम चाहो तो मैं मिल लूंगा उससे।"

"लेकिन पापा ऐसी कोई सीरियस बात नहीं। मैं खुद भी नहीं जानती यह रिश्ता किस तरह का आकार लेगा।"

"पर अगर तुम्हें अपने पर भरोसा या उसके मन का ज्ञान नहीं तो उसके अपार्टमेंट में क्यों जा रही हो?...एक बात कहूं?"

अचानक एक डर का भाव जगा।क्या कहेंगे पापा!

"देखो बेटे। मैं खुद चूंकि एक मर्द हूं इसलिये मर्द के नजरिये की ही सलाह दूंगा। कोई भी लड़की जब इस तरह पुरुष के पास जाती है तो पुरुष उसकी कद्र नहीं करता। अपने आप को दुर्लभ बनाकर रखो तो देखो कैसे लड़के पीछे भागते हैं।"

"पापा!" नेहा ने कहना चाहा कि अब तक तो उसने खुद को दुर्लभ ही बना कर रखा हुआ है।पर उसे ऐसे कोई पीछे भागने वाले नहीं मिले। जो आये वे पहले उससे दोस्ती ही करना चाहते थे, उसे जानना चाहते थे।अगर वह खुद सबसे दूर रहती है तो आत्मीयता ही कहां बनती है, दोस्ती ही क्योंकर होगी!

नेहा ने गौर किया कि पापा आखिर पापा ही थे--बेटी की अस्मत को लेकर घबराये हुए। पर उनका कहने का अंदाज़ रौबीला नहीं, दोस्ताना था।

पापा को आश्वस्ति देने का मन हो आया था नेहा का।

"हम लोग साथ-साथ एक प्रोजेक्ट पर भी काम करना चाहते हैं"

"कैसा प्रौजेक्ट"

"एक फिल्म प्रौजेक्ट"

नेहा को कहते हुए लगा कि वह झूठ नहीं बोल रही थी।पीटर और उसने इस बारे में काफी लंबी बातचीत कर रखी थी। चाहे आज वह सिर्फ इसी बातचीत के सिलसिले में नहीं जा रही थी। और भी बहुत सी गप्पें मारनी थीं।

कहीं उसे भी अंदाज़ा था कि अपने अपार्टमेंट के सूनेपन में पीटर उसे छू भी सकता था और छूने से आगे भी.....। नेहा सिर से पैर तक सिहर गयी थी। पर उस सिहरन में डर से ज्यादा चुनौती थी। और उसे महसूस हो रहा था कि वह हर तरह की चुनौती के लिये अब तैयार थी। साथ ही वह यह भी जानती थी कि पूरी तैयारी के बावजूद वह पीटर के साथ सिर्फ फिल्म का चर्चा करके भी वापिस आ सकती थी।

नेहा को भी समझ नहीं आता था कि क्या अच्छा है, क्या गलत! बचा रहना या डूब जाना। दोनों ही स्थितियां श्रेयस्कर हो सकती थीं। दोनों ही खतरनाक!

वे लोग हाईवे से उतर के पहले एवेन्यू पर आ गये थे। सामने पीली बत्ती थी।पीछे गाड़ियां आ रही थीं।पापा बोले कि"चलती रहो " और समझाने लगे उसे-"पीली बत्ती पर गाड़ी रोकनी होती है। पर अगर तेज़ गति से चल रहे हो और अचानक पीली बत्ती हो जाये तो गाड़ी की गति तेज़ करके निकल जाना चाहिये वर्ना पीछे से उसी तेज गति से आती गाड़ी मार सकती है।"

फिर अचानक जैसे ध्यान आ गया हो, बोले-

"कैसा फिल्म प्रौजेक्ट"?

"अभी तो उसकी स्क्रिप्ट ही तैयार कर रहे हैं। सती पर फिल्म बनायेंगे"

"सती?"

"हां। आप इतने हैरान क्यों हैं?"

"तुम क्या जानती हो सती के बारे में? क्या थीम होगी?"

"हम कहानी को उन्नीसवीं सदी में जड़ रहे हैं। उसमें ब्रिटिश सुधारक भी होंगे। वह अंग्रेज सती होने वाली हीरोईन को बचा लेता है और फिर उन दोनो के संवादो के बीच से हिरोईन के नजरिये में बदलाव लाया जायेगा।"

"तुम्हारा मतलब कि वह सती प्रथा का खंडन करेगी।"

"पर उसे अपना धर्म बदलना पड़ता है क्योंकि हिंदु समाज से उसे बहिष्कृत कर दिया जाता है कि वह पति की चिता से उठी क्यों!"

"पर हिंदु धर्म हर औरत को पति के साथ जल मरने की आज्ञा तो नहीं देता। यह सब तुम्हारे अधकचरे ज्ञान को प्रगट करता है। मुझे तो इस कहानी में तुक नहीं नजर आ रही।"

"दिस इज़ पोस्टकोलोनियल स्टफ। दो बातें हैं पापा।एक तो मैं अंर्तराष्ट्रीय फिल्म बनाना चाहती हूं जो भारत और यहां दोनों को समेटे ताकि दुनिया भर के दर्शक वर्ग को देखने में दिलचस्पी हो, दूसरे सती जैसी बुरी प्रथा पर फिल्म बननी चाहिये और दुनिया के लोगों का इस पर ध्यान जाये ताकि इसके शमन की ओर कुछ किया जाये। तीसरा यह भी कि विषय ऐसा है कि हमें फिल्म बनाने के लिये पैसा मिलने में भी कम मुश्किल होगी!"

"और तुम्हारा आर्किटेक्चर?"

"फिल्म के साथ-साथ वह भी चलाती रहूंगी। शूटिंग के दौरान लंबी छुट्टी ले लूंगी। पीटर ने तो इसीलिये हाई-प्रैशर नौकरी छोड़कर स्कूल पढ़ाने का काम शुरु कर दिया है ताकि फिल्म पर वक्त लगा सके। अभी तो शूटिंग की स्टेज आने में बहुत वक्त पड़ा है।अभी तो स्क्रिप्ट ही पूरा नहीं हुआ।"

उस दिन पापा ने उसे ड्राप कर दिया था। अजीब बात है कि है पापा उसे समझते है और उसके दोस्त जैसे बनते जा रहे हैं जबकि ज्यों-ज्यों वह बड़ी हो रही है ममी का नजरिया सकुचाये जा रहा है। एक उतावली और घबराहट सी रहती हैं उनमें नेहा की शादी के मसले को लेकर। नेहा को लगता है कि यह सब उनकी अमरीका में बसी हिंदुस्तानी सहेलियों का दबाव है वर्ना ममी बड़े खुले सोच वाली थीं। उसने इस बात पर ममी से आमना-सामना भी किया था-"चूंकि अंशुल सन्यासिनी हो गयी तुम सोचती हो मेरे साथ की सारी लड़कियां पागल हैं या हो जायेंगी।"

"हां वक्त पर शादी होना बहुत जरूरी है।"

"जो न हो तो.."

"तो बहुत बुरा होगा"

"क्या बुरा होगा?"

"आखिर ये रिवाज बने हैं तो इनका कुछ मतलब ही है न।"

"मतलब तो यही है न कि बच्चे पैदा करो और घर-गृहस्थी में जुत जाओ।पर मैं तो वैसे ही जुती हूं नौकरी में, फिल्म बनाने में। मेरे पास गृहस्थी चलाने की फुरसत अभी कहां है? जब होगी तो सोच लूंगी और कभी न हुई तो कभी नहीं सोचूंगी। "

"यही तो मुश्किल है। तुम सोचती हो कि बिना गृहस्थी के सारी उम्र कट सकती है। तभी तुमने मेरे लाख कहने के बावजूद खाना तक बनाना नहीं सीखा।"

"ममी मेरे साथ के सारे लोग ज्यादातर खाना बाहर ही खाते हैं।किसी को बनाना नहीं होता। बनाने का शौक हो तो एकाध चीज सीखी भी जा सकती है पर वह ऐसा कोई "मस्ट" नहीं है जैसा तुम समझती हो।"

"जा, जा। तेरे से बहस कौन करे।"

नेहा ममी के रुख से बेहद परेशान हो जाती थी।कहां तो ममी दुनिया भर में ढिंढोरा पीटती थी कि वह अपनी बेटी के साथ शादी की जबरदस्ती कभी नहीं करेंगी, अब जैसे उसकी उम्र के हर बढ़ते साल के साथ उल्टे रास्ते पर बढ़े जा रही हैं।

नेहा का डर सच निकला।ममी ने पीटर के बारे में सवाल पूछ ही लिया।

जब पापा ने उसे पीटर के यहां ड्राप किया था उन्हीं दिनों ममी ने भी सवाल पूछा था उस रिश्ते में शादी की गंभीरता का।

ममी को तो टाल दिया था नेहा ने पर अपने-आप से वह यही सवाल बार-बार पूछती थी और कभी-कभी पीटर से भी। उस दिन जब पापा ने उसे पीटर के यहां ड्राप किया था तो वही

सब हुआ जिसका पापा को डर था और फिर भी उसने सब कुछ नहीं होने दिया क्योंकि पापा की बात कहीं भीतर गड़ गयी थी।

पीटर ने उसका हाथ छुआ ही था कि वह बोल पड़ी-

"अगर तुम्हारा शादी का □याल नहीं तो मैं इस रिश्ते को आगे बढ़ाना नहीं चाहूंगी।"

पीटर ने धचके से हाथ पीछे कर लिया था। बहुत देर खामोश सोचता रहा था।

फिर पीटर ने उसका चेहरा दोनो हाथों में थाम चूम लिया और उसके कंधे थपथपाता हुआ बोला था-"इतनी तन्ज़ क्यों हो तुम आज? रिलैक्स!"

"रिलैक्स करने का वक्त रहा नहीं। रोज किसी न किसी ढंग से शादी की बात छिड़ ही जाती है।" खुद को पीटर के स्पर्श से झटक कर नेहा ने कहा था।

"तुम सचमुच शादी करना चाहती हो मुझसे?"

"पता नहीं" नेहा के मुंह से निकला था। ममी-पापा की पसंदगी-नापसंदगी, खुद पीटर के साथ भविष्य को लेकर संदेह...कितना कुछ तो था इस जवाब की भूमिका बनाता हुआ। वह शायद हां कहना चाहती थी।पर मन में खीझ सी भरी हुई थी। उसकी जिंदगी का सबसे अहम फैसला था और उसे समझ ही नहीं आ रहा था कि क्या फैसला ले।

"तो मुझसे क्या उम्मीद करती हो? मैं तो फिलहाल शादी-वादी का सोचना चाहता ही नहीं। फिर यह भी तो जरूरी है कि हम एक दूसरे को भलीभांति जान लें..पूरी तरह से..."

"जिस जानने की तुम बात करते हो वह शादी के बाद ही हो सकता है.."ः

"शादी का फैसला मैं तभी कर सकता हूं कि हमारी हर तरह से कम्पैटिबिलिटी हो"

"मान लो तुम्हारी बात मान भी लूं तो क्या गारंटी है कि तुम मुकर नहीं जाओगे।"

"गारंटी तो कभी होती ही नहीं! शादी के बाद भी नहीं! क्या तुम मुझे गारंटी दे सकती हो कि मुझे कभी छोड़ कर नहीं जाओगी."

"हां...पर अगर तुम किसी दूसरे की ओर आकर्षित हो जाओ तो मैं तुम्हारे साथ चिपकी नहीं रहूंगी"

"खैर वे सब कहने की बातें हैं।अगर गारंटियां होतीं तो इतने तलाक क्यों होते? हमारा रिश्ता आज सुखद है तो कल को बिगड़ भी सकता है। रह कर पता लगता है और साथ रहने से तुम घबराती हो।"

"तुम्हें मेरी मजबूरी का पता है। मुझमें भी तुम्हें खुद को सौंप देने की उतावली तुमसे कम नहीं"

"और उसके लिये तुम मुझे शादी जैसी चीज में घसीटना चाहती हो। शादी का मतलब साथ रहना उतना नहीं जितना कि दुनियावी जिम्मेदारियों को निभाना होता है--ठीकठाक घर, ठीकठाक साजसज्जा, ठीकठाक बच्चे--सब कुछ ठीकठाक होना होता है। मैं अभी उस

सब के लिये तैयार नहीं। अगर तुम सचमुच मुझे प्यार करती हो तो उस चक्कर में डालना नहीं। "

और फिर बात यहां तक पहुंच गयी थी कि पीटर जब भी उसे छूने की कोशिश करता वह खुद को जकड़ लेती ताकि बहाव में आकर कुछ गलत न कर बैठे। एक बार उसने कह ही डाला था-"क्या बात है मेरा स्पर्श तुममें कोई भी प्रतिक्रिया जगाता नहीं?"

वह यूं ही जकड़ी खामोश बैठी रही थी।

फिर पीटर से मिलने से कतराने लगी थी। शायद पहले अपने भीतर को सुलझा लेना चाहती थी।

किस पर भरोसा करे? पीटर पर या ममी-पापा पर? वह खुद क्या चाहती है?

अब छह महीने बाद ममी ने फिर वही सवाल दुहराया तो नेहा ने कितने सारे तनावों से एक साथ मुक्ति पाने के लिये बक दिया था-"मुझसे मत पूछा करो यह सवाल! यहां के लड़कों में कमिटमेंट ही नहीं है। मैं क्या करूं!"

नेहा के चेहरे पर ज़रदी और लाली एकसाथ आ-जा रही थी।

ममी ने भांप लिया था और किसी अवश्यंभावी खतरे ने उनको सहमा दिया था ।

नेहा चाहे उसे खतरा मानती हो या न पर मन अस्वस्थ जरूर हो रहा था।

उसने पापा से कहा था-"यहां मैनहैटन में गाड़ी चलाने का मौका ही नहीं मिलता। इसलिये कान्फिडेंस ही नहीं जमता। आपको फिर कुछ प्रैक्टिस करानी होगी।"

ममी ने उनके निकलने से पहले कह दिया था-"तू मेरी बात मान तो अभी भी देर नहीं हुई। बात चलाती हूं।कहीं न कहीं तो काम बनेगा ही। इतनी बड़ी आर्किटेक्ट है तू। कल उमा कह रही थी कि उसकी सहेली का लड़का भी अभी कुंवारा बैठा है। मीटिंग तय कर दूं तुम दोनों की? अपने-आप से ही बाहर कहीं मिल लो। हमें बीच में डालने की भी जरूरत नहीं।"

पापा ने ममी को डांट दिया था-"क्यों बार-बार उसे एम्बैरेस करती हो।जब शादी को तैयार होगी तो अपने-आप बता देगी। बड़ी हो गई है, अपने बारे में खुद फैसला ले सकती है। तुम पहले तो उसे यहां के खुले ढंग से पालती रही हो, अब क्या फिर से पीछे धकेलना चाहती हो!"

गाड़ी चलाते हुए नेहा को लगा कि उसकी ड्राईविंग पर पकड़ काफी अच्छी हो गयी है। थोड़ी सी प्रैक्टिस के बाद शायद वह अपने-आप से पूरे आत्मविश्वास के साथ चलाने लगेगी।

अचानक उसने पापा को कहते सुना-"लाल बत्ती पर हमेशा रुका करो।कई बार आसपास ट्रैफिक नहीं होता तो इंसान की प्रवृति होती है कि चलता जाये।पर अगर लाल बत्ती पर सड़क पार करने की ऐसी आदत डाल लो तो अकसर दुर्घटना होने का खतरा हो जाता है।

क्योंकि ऐसा मुमकिन है कि आप ध्यान से न देख सकें और अचानक कोई गाड़ी कहीं से निकल कर आपसे टकरा जाये। "

और पापा ने दुहराया-" सो लाल बत्ती के होते सड़क कभी पार मत करना यह चेतावनी तुम्हें बार-बार देता हूं."

नेहा चौंकी। पापा क्यों बतला रहे थे उसे यह सब।क्या उसने सचमुच लाल बत्ती पार की थी!

या पापा का उसे आगाह करते रहना एक पिता के धर्म पालन से ज्यादा नहीं था। पापा के अपने मन के डर....।

कहीं ऐसा तो नहीं कि बत्तियां आये-जाये चली जा रही थी। गाड़ियां निकले चली जा रही थीं और वह लाल बत्ती पर ही ठिठकी थी।

पापा कहते चले जा रहे थे-"यूं तुम सीख तो गयी हो अब।अच्छा चलाने लगी हो। बाकी जितना चलाओगी उतना ही आत्म विश्वास भी बढ़ेगा। बस सड़क की लय सुनना मत भूलना।यही एक अच्छे ड्राईवर की निशानी है।वर्ना बार-बार दुर्घटनाएं होंगी। इस देश में अपने बूते जीने के लिये गाड़ी चलाना भी उतना ही जरूरी है जितना पढ़ना-लिखना। इसलिये जरूरी है कि सड़क की लय को सुनो और उसी हिसाब से चलाओ ताकि सेफ ड्राईवर बन सको!"

सहसा नेहा को लगा जैसे जो पापा कह रहे हैं, वह सुन नहीं रही है..... फिर भी कुछ सुन रही है....? पर जो वह सुन रही है वह शायद पापा नहीं सुन रहे....या शायद पापा कह भी नहीं रहे....पर नेहा सुन पा रही है। कुछ ऐसा जिससे न तो वह वाकिफ थी, न ही जिसके प्रति सजग! जैसे वे स्वर कहीं दूर से....किसी बहुत गहरे समुद्र से उठे हो....बहुत अस्पष्ट, भारी और गीले से! अपने ही बोझ से झुके...कि सतह पर आयें भी तो जलराशि में निमग्न....पहचान से बाहर। वे ध्वनियां....वे स्वर....जो किन्ही शब्दों में नहीं ढल पाते या सुने जाते.....किसी लहर की ही तरह कहीं से उठते और कहीं समा जाते हैं....।

क्या वही थी सड़क की लय!

पापा कह रहे थे-"तुम मुझे पहले घर ड्राप कर दो। उसके बाद जहां जाना हो चली जाना।"

पर यह तो पापा की आवाज नहीं थी...कुछ ऐसी आवाज थी कि लगता था उसकी अपनी आवाज से ही मिलती जुलती है.....सामने हरी बत्ती थी शायद।नेहा ने गाड़ी चला दी।